INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

मध्यकालीन भारतीय लघु चित्रण शैलियों के चित्रों में कलात्मक हाशियों का अंकन एवं महत्व: एक अध्ययन

डॉ. श्रीमती मंजुला निंगवाल [1]
[1] महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, किला भवन, इन्दौर (म. प्र.)

शोध-सारांश
कला आत्मा की अभिव्यक्ति है। वह मानव हृदय के गूढ़ रहस्यों का उद्‌घाटन भी है। मानव के चेतनशील हृदय पर बाह्य प्रकृति का जो प्रभाव पड़ता है, उसी से कला का प्रस्फुटन होता है। इसलिए मनोभावों को व्यक्त करने की शाश्वत एवं उत्कट भावना को कला की जननी माना गया है।

मुख्य शब्द – भारतीय, कलात्मक, अध्ययन

Cite This Article: डॉ. श्रीमती मंजुला निंगवाल. (2019). "मध्यकालीन भारतीय लघु चित्रण शैलियों के चित्रों में कलात्मक हाशियों का अंकन एवं महत्व एक अध्ययन." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 297-300. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592685.

कला के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण यह भी है कि कोई भी अभिव्यक्ति या विचार कला की संज्ञा नहीं पा सकता, जब तक उसमें सौन्दर्य का योग न हो। कला और सौन्दर्य एक-दूसरे से अभिन्न रूप से संबद्ध होते हैं। हीगेल ने प्राकृतिक सौन्दय को ईश्वरीय सौन्दर्य का आभास माना और कहा है कि कला इसी आभास की पुनरावृत्ति है।

भारतीय इतिहास में मध्यकाल पुनरुत्थान का समय माना जाता है। मध्यकाल में सभी कलाओं की भरपूर उन्नति हुई। आपसी अन्र्तसंबंध स्थापित करते हुए कलाएँ उत्कृष्टता की चरम सीमा पर पहुँची। चित्रकला के क्षेत्र में लघु चित्रण शैली का उद्‌भव एवं विकास हुआ। पोपिट्स पौधे से निर्मित कागज का आविष्कार होने से लघु चित्रण शैली खूब पल्लवित और विकसित हुई। ये युग साहित्य सृजन, पोथी चित्रण और लघु चित्रण का युग रहा। मध्य युग के रीतिकाल में कलाकारों को राज्याश्रय और सम्मान मिला। रीतिकालीन कवियों ने श्रृंगार विषयक ग्रंथों की रचनाएँ की, जिसने चित्रकला की विषयवस्तु को सुन्दर स्वरूप प्रदान किया। वस्तुतः मध्य युग की लघु चित्रण शैलियों में प्रमुख रूप से राजस्थानी पहाड़ी और मुगल शैली के चित्र आते हैं। जो अपनी विशिष्टता कलात्मकता और सुन्दरता के कारण भारत में ही नहीं, वरन् विश्व भर में प्रसिद्ध है। इन चित्रों को भव्यता और सुन्दरता प्रदान करने के लिए विषय के अनुरूप आकारों और रंगों का मानवाकृतियों, पशु-पक्षियों और प्रकृति का सुन्दर कलात्मक संयोजन किया गया है। और साथ ही चित्र को सुन्दर रंगीन होशियों के बीच संजोया गया है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592685

किसी भी रुपात्मक अभिव्यक्ति के लिए हाशिए का अपना एक महत्व है, इसके अभाव में चित्र में ठहराव और पूर्णता प्रतीत नहीं होती। भारतीय चित्रकला के इतिहास पर नज़र डालने पर हम देखते हैं कि प्रारंभ से ही इसके महत्व को समझा गया है।

हाशिए बनाने की शुरूआत आदिकाल की चित्रकला से हुई। आदिकाल में चित्रों को चूने से पुते सफेद धरातल पर बनाया गया है। इन चित्रों की सीमाएँ लाल रंग से बनायी गयी हैं। चित्रों के विभाजन के लिए बनाए गए हाषिये में पीले रंग का प्रयोग किया गया है। यह चित्र जोगीमारा गुफाओं से प्राप्त हुए हैं। इसके पश्चात् अजन्ता, बाघ आदि गुफाओं के चित्रों में चित्र विषय से अनुरुप विभाजन हेतु पतले और चौड़े हाशियों का प्रयोग किया गया। पाल, जैन, अपभ्रंश शैली के पानी चित्रों में हाशियो का भरपूर अंकन है। जिन्हें अलग-अलग रूपों में आवश्यकतानुसार बनाया गया है।

मध्यकालीन लघु चित्रण शैलियों के हाशिए, अपनी विषिष्टता और कलात्मकता के कारण निजी महत्व रखते हैं। राजस्थानी, पहाड़ी और मुगल चित्रों के हाशिए अपनी उप शैलियों में विविधता और विभिन्नता लिए हुए है। राजस्थानी शैली के चित्रों में अंकित हाशियो को सम्पूर्ण रूप में देखें तो पाते हैं कि ये हाशिये पतले, दोहरे कुछ चौड़े और प्रायः एक या दो रंग के सपाट रंगों के द्वारा बनाए गए हैं। रंगों का चयन चित्र के रंग संयोजन के आधार पर किया गया है। चौकोर, अंडाकार, गोलाकार रूपों में अंकित ये हाशिए प्रायः लाल, पीले, गुलाबी, काले, हल्के नीले और सुनहरे रंगों से बनाए गए हैं। कहीं-कहीं सुन्दर लिपि में कुछ लिखा भी गया है। वैसे तो प्रायः ये हाशिए सादा सपाट रंग भर कर बने है, परन्तु चित्रों में सरल आलेखनों द्वारा सजाया भी गया है। कुछ चित्रों में तो केवल एक तरह या दो तरफ ही हाशिए बनाए गए है।

राजस्थानी मेवाड़ शैली के चित्रों के हाशियों को प्रायः लाल या पीली सादा पट्टियों से बनाया गया है। यहाँ के चित्रों में लाल हाशिए, हिंगूल तथा सिन्दूर रंगों को मिलाकर बनाते थे। जोधपुर शैली के चित्रों में हाशिए लाल और उनकी सीमान्त रेखाएँ पीले रंग से खींची गयी है।

बूँदी शैली के हाशिए स्वर्ण रेखा से सम्पन्न सिन्दूरी रंग में या पीले हरे रंगों से बने हैं। इसी प्रकार जयपुर के चित्रों में प्रायः काले तथा लाल हाशिए बने हैं। अच्छे चित्रों के हाशिए फूलदार बूटियों तथा पत्तियों के अत्यंत रूपों से सजे हुए बनाए गए है। कभी-कभी सीमान्त पट्टियों की यह सजावट चित्रों को गौण बना देती है। बूँदी शैली के चित्रों में हाशिए प्रायः ऊपर की ओर चौड़े बने हैं, जिन पर महलों के गुम्बद को भी बना दिया गया है।

पहाड़ी शैली के चित्रों में हाशियों की कलात्मकता देखते ही बनती है। चित्र के रंगों के अनुरूप पतले, चौड़े, गोल, अंडाकार, चौकोर, कलात्मक हाशिए पहाड़ी शैली के चित्रों में चार चाँद लगा देते हैं। हाशियों पर प्रायः लाल, भूरे, नीले, जामुनी, गुलाबी, पीले और सिन्दूरी रंगों को भरा गया है।

अधिकांशतः हाशियों को सुन्दर गतिमय बेलबूटों के द्वारा आलेखकों को पुनः पुनः अंकित करके सुन्दर उचित रंग संयोजनों से संजोया गया है। कहीं ज्यामितिक रुपों की सरलता में, तो कहीं पारम्परिक रुपों में, फल-फूल, पत्तियों, पक्षियों आदि को घुमावदार रुप देते हुए कुशलतापूर्वक अंकित किया गया है। इन आलेखनों की सीमा रेखाएँ भी बनायी गयी हैं।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592685

चम्बा शैली में हाशियों में फूल पत्ती व पक्षी आदि की सजावट की गई है। कहीं-कहीं सम्पूर्ण चित्र भी उनमें बना दिए गए हैं। कांगड़ा लघु चित्रों के हाशिए में चित्रों के चारों और पतला हाशिया बनाया गया है। जिसमें सरल आलेखन भी बनाए गए है।

गढ़वाल शैली के चित्रों में हाशियों में आलेखन बनाए गए है, जिसमें सोने-चांदी के रंगों का प्रयोग किया गया है। पहाड़ी शैली की सम्पूर्ण उप शैलियों में कांगड़ा शैली के हाशिए अत्यन्त कलात्मक और आकर्षक रंग संयोजनों द्वारा बनाए गए है। इस शैली के हाशियों के अंकन में भी वही कुशलता है जो चित्रों के अंकन में हमें देखने को मिलती है। राजस्थानी और पहाड़ी शैली के उपरान्त मुगल शैली के चित्रों में अंकित हाषियों की बात करें तो इसमें भी हाशियों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। इस शैली में अंकित हाशिए पर कुफिका लिपी से चित्रकार का नाम आदि भी लिखा जाता था। "मुगल चित्रों के हाशिए भी कुशल कलाकार के द्वारा बनाए जाते थे। इन हाशियों में बेलबूटों के अतिरिक्त आखेटस्थल या चित्र के प्रसंग से सम्बन्धित या मेल खाते पशु-पक्षी, पुरुष या मानवाकृतियों पर आधारित लेख बनाए जाते थे। कभी-कभी ये हाशिए चित्र से भी सुन्दर बन गए हैं।

जहाँगीर काल में हाशियों की सुन्दरता बढ़ गयी थी। हाशियों में जनजीवन के दृश्य, व्यक्ति विशेष का अंकन पशु-पक्षी, पेड़-पौधों को अलंकरण रूप में बनाया जाता था। कुछ हाशियों पर बल की सहायता से सोने का वर्क चिपकाया जाता था। इस समय के हाथियों पर पॉपी और लिली के कुलों का सर्वाधिक अंकन मिलता है।

शाहजहाँ के समय बने चित्रों में "हाषिये चौड़े बनाए जाते थे, जिसमें चित्र के अनुसार आकृतियों को दिखाया जाता था। इसमें हिरण, फरिश्ते, अनुचरों आदि का अंकन भी प्रायः किया जाता था। सुन्दर बेलबूटों का प्रयोग यथावत चलता रहा।" मुगल शैली के हाशिए चित्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये हाशिये प्रायः पीले, गुलाबी, काले, जामुनी और सुनहरे रंग की सपाट पृष्ठभूमि पर कलात्मक आलेखनों से सुसज्जित है।

मध्यकालीन लघु चित्रण शैली की प्रमुख इन तीनों शैलियों के चित्रों में बने हाशियों का अध्ययन करने के बाद हमें ज्ञात होता है कि ये हाशिये समानताएँ और विभिन्नताएँ लिए हुए हैं जो इनके रूप, आकार और शैली से संबंधित है। राजस्थानी पहाड़ी और मुगल शैली के चित्रों में पतले और चौड़े दोनों तरह के हाषिये बने है ओर इन पर सादा सपाट रंग भरकर इनको काले रंग से रेखांकित भी किया गया है। प्रायः इन पर कलाकारों के नाम वगैरह भी लिखे गए हैं। तीनों लघु चित्रण शैलियों के चित्रों में कहीं-कहीं एक या दो तरफ हाषिए बनाए गए हैं। इनमें प्रायः फूल और पत्तियों द्वारा सुन्दर, गतिमय आलेखन अंकित है। जिनकी सीमा रेखाएँ बनाकर सुस्पष्ट और सुन्दर अंकन किया गया है। चारों ओर बने इन आलेखनों को दोहराते हुए गति के साथ बनाया गया है।

इन लघु चित्र शैलियों के चित्रों के हाशिए विभिन्नताएं भी लिए हुए है। राजस्थानी चित्रों के हाशिए अधिकांशतः सादे सपाट रंगों से ही बने हैं। इनमें कलात्मक आलेखनों आदि का अंकन नहीं है। कहीं बने भी है तो बहुत पतले हाशिए पर बहुत सामान्य फूल-पत्तियों के आकारों को दोहराते हुए आलेखन अंकित है। मुगल और पहाड़ी शैली के चित्रों में सृजित कलात्मक आलेखनों से भरपूर हाशियों का, राजस्थानी चित्रों के हाशियों में अभाव है। पहाड़ी चित्रों के हाशिए चित्र के चारों ओर पतले और कहीं चौड़े तो बने ही है। जिन पर छोटे-छोटे आलेखनों को दोहराते हुए बनाया गया है परंतु इनको और अधिक महत्वपूर्ण मानते हुए चित्र को अंडाकार, गोल और चौकोरनुमा हाशियों के बीच अंकित किया गया है। चौकोर हाशियों के चारों तरफ शेष बचे स्थान पर अत्यन्त सुन्दर, कलात्मक, आलेखन अंकित है। इस तरह के हाशिए राजस्थानी और मुगल शैली के चित्रों

में ही बने हैं। मुगल शैली के बने चित्रों के हाशियों पर तो सुन्दर लिपि से लिखावट है। इन हाशियों पर धुंधले रंगों से आलेखन बने हैं। इन पर सोने और चाँदी के रंगों का भी प्रयोग है। प्रसंगानुसार प्रायः बादल, पहरेदार, स्त्री-पुरूष की आकृतियाँ वगैरह मुगल चित्रों के हाशियों पर ही बनायी गयी है।

राजस्थानी और पहाड़ी चित्रों में इस प्रकार कलात्मक अंकन नहीं मिलते हैं। संपूर्ण रूप से तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् हम देखते हैं कि राजस्थानी और मुगल चित्रों के हाशियों से पहाड़ी चित्रों के हाशिए अधिक आकर्षक, मनोहर और कलात्मक हैं जो बरबस अपनी ओर दर्शक को आकर्षित कर लेते हैं। जिस प्रकार पहाड़ी शैली के चित्रों में कोमल आकर्षक रंग संयोजन, सुस्पष्टता, बारीकियाँ, रूप मुद्राएँ और अंग भंगिमाओं में यथार्थ, कोमल परंतु गतिपूर्ण रेखांकन कलात्मक शैली के दर्शन होते हैं, उसी प्रकार इन चित्रों के हाशियों पर अंकित आलेखन भी उतने ही स्वाभाविक गतिमय और कलात्मक बने हुए हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय चित्रकला की इन महत्वपूर्ण लघु चित्रण शैलियों के चित्रों में हाशियों का एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। उन्हें केवल सुविधा और सुस्पष्टता की दृष्टि से ही नहीं अंकित किया गया है बल्कि ये कलात्मक हाशिए चित्र का एक अंग ही समझकर उन्हें अंकित किया गया है। इन हाशियों ने चित्रों के प्रस्तुतिकरण को सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है और किसी भी कला का प्रस्तुतिकरण बहुत अधिक महत्व रखता है।

संदर्भ

[1] मध्यकालीन भारतीय चित्रकला - डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल
[2] भारतीय चित्रकला का इतिहास - अविनाश बहादूर वर्मा
[3] कला विज्ञान - आर ए. अग्रवाल
[4] कला और कलम - जी. के. अग्रवाल
[5] भारतीय चित्रकला - वाचस्पति गैरोला